के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनन्द का योग रहता है।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 7

(*i*) संस्मरण की विशेषताएँ

(*ii*) उपन्यास के तत्व

(*iii*) आत्मकथा का स्वरूप।

11-5-17 (Evening)

This question paper contains **4** printed pages]

Roll No.

S. No. of Question Paper : **9043**

Unique Paper Code : **52051407** **GC**

Name of the Paper : **Hindi 'A'**

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : **IV**

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'निबंध' **अथवा** 'नाटक' के स्वरूप का विवेचन कीजिए। 12

2. 'नमक का दारोगा' कहानी में निहित संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

3. ''मेरे राम का मुकुट भीग रहा है,'' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। 12

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की विशेषताओं का उद्‌घाटन कीजिए।

अथवा

'भोलाराम का जीव' का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) पथ अन्धकारमय था और मधूलिका का हृदय भी निविड़ तम से घिरा था। उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह जैसे अन्धकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ हो ? फिर सहसा सोचने लगी, वह क्यों सफल हो ? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाए ? मगध कोशल का चिर-शत्रु! ओह, उसकी विजय!

(ख) उसकी तबाही के साथ एक महान नेता के निर्माण करने का मेरा हौसला भी मुझे तबाह होता नजर आया। लेकिन इतनी आसानी से मैं हिम्मत हारने वाली नहीं थी। बड़े धैर्य के साथ मैं अपनी कहानी का विश्लेषण करने बैठी कि आखिर क्यों, सब गुणों से लैस होकर भी मेरा नेता, नेता न बनकर चोर बन गया ? और खोजबीन करते-करते मैं अपनी असफलता की जड़ तक पहुँच ही गयी। गरीबी के कारण ही उसके सारे गुण दुर्गुण बन गये और मेरी मनोकामना अधूरी ही रह गयी। जब सही कारण सूझ गया, तो उसका निराकरण क्या कठिन था।

(ग) दु:ख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद-वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति